# ‘जगदीशचंद्र के उपन्यासों का चरित्रगत अध्ययन’

**स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के**

**मानव्य विद्या संकाय केअंतर्गत हिंदी विषय**

**में विद्यावाचस्पति(पीएच.डी) उपाधि हेतु प्रस्तुत**

**शोध-प्रबंध की रूपरेखा**


**शोधकर्ता**

**बिरादार उमाकांत अन्नेप्पा**

एम.ए., एम. फिल.

हिंदी विभाग प्रमुख

कै. बापूसाहेब पाटील एकंबेकर ग्रामीण महाविद्यालय,

हणेगांव ता. देगलूर जि. नांदेड.

**शोध निर्देशक**

**डॉ. येरावार संतोष विजयराव**

(एम.ए,बी.एड्,एम.एस.डब्लू,नेट,पीएच.डी.)

हिंदी विभाग प्रमुख

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

जि. नांदेड


**मार्च २०१६**

# शोध प्रबंध का प्रारुप

साहित्य व्यक्ति की अनुभूति की अभिव्यक्ति का साधन है।  साहित्य मानवीय संवेदनाओं के साथ ही सामाजिक चिंतन तथा चित्रण की एक श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति मानी जाती है। साहित्य की बहुतसी विधाएँ है जिनके द्वारा लेखक, कवि, अपनी अनुभूति को व्यक्त करता है। समाज में घटित घटनाओं का एक सशक्त दर्पण साहित्य को कहा जाता है। इसी प्रकार के सशक्त साहित्य का रुप हमारे हिंदी साहित्य संसार में देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से समाज के समस्त दर्शन हमें होते है।

उपन्यास सहित्य में अधिक रुचि होने के कारण मैंने बहुतसे उपन्यासों को पढ़ना चाहा । मैंने ‘कभी ना छोड़े खेत’ इस उपन्यास को पढ़ा जिसके लेखक जगदीशचंद्र है। इस उपन्यास को पढ़ने के बाद मुझे इनके अन्य उपन्यासों को पढ़ने की लालसा जगी। तब मैंने ‘धरती धन न अपना’, ‘ नरक कुण्ड में बास’, ‘जमीन अपनी तो थी ’इन उपन्यासों का अध्ययन किया। इन उपन्यासों को पढ़ने के बाद इसके पात्र मेरे मन में एक अजीब सी हलचल पैदा करने लगे।

जगदीशचंद्र के उपन्यासों में प्रस्तुत पात्र मेरे मन को आकर्षित कर गए थे। इन पात्रों की विभिन्न विशेषताओं में नयापन उगने लगा लेकिन कुछ ऐसे भी पात्र है जो आज के वर्तमान युगीन मनुष्य से पूर्णतः जुडे हुए नजर आते है। जगदीशचंद्र के उपन्यास पात्रों की विशेषताओं से आकर्षित होकर मैंने ‘जगदीशचंद्र के उपन्यासों का चरित्रगत अध्ययन’ इस विषय को लेकर अनुसंधान करने की बात ठानी।

जगदीशचंद्र के उपन्यासों द्वारा समाज का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। समाज में व्याप्त चरित्रों को इनके उपन्यासों में देखा जा सकता है। लेखक के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष चरित्रों का यथार्थ रुप से चित्रण किया गया है। माँ की ममता, पत्नी के विभिन्न रुप, प्रेमिका, बहन, भाभी, चाची इन सभी स्त्री चरित्रों को सशक्त रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास मैं इस अनुसंधान के द्वारा करना चाहता हूँ। उसी तरह ही एक पिता, पति,

भाई, देवर, चाचा, प्रेमी सभी प्रकार के पात्रों का चरित्र-चित्रण लेखक के उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत करने का काम इस अनुसंधान से किया जाएगा।

आज के इस आधुनिक युग में एक मनुष्य दूसरे के साथ किस प्रकार का व्यवहार कर रहा है इसके हर एक उदाहरण को लेखक के उपन्यास पात्रों के द्वारा स्पष्ट करना यह मेरे अनुसंधान का उद्येश है। एक प्रेमिका का आधुनिक प्रेम, समाज में बढती शत्रुता, देश के लिए कुर्बान होनेवाले सैनिक की व्यथा, जमीन के दुखियारे किसान की व्यथा इन सारी समस्याओं को लेखक के उपन्यासों में प्रस्तुत किया गया है ।

मनुष्य अपना जीवन व्यथित करते हुए किस प्रकार से अपना कर्तव्य निभा रहा है और किस प्रकार से सामाजिक व्यवहार कर रहा है इस बात की वास्तविकता को लेखक के उपन्यास पात्रों द्वारा प्रस्तुत करना चाह रहा हुँ । आज इन्सान को जीवन जीते हुए ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पढ़ रहा है। किसान की समस्याएँ, नारी समस्याएँ, दलित जीवन की समस्याएँ इन सारी समस्याओं में एक मनुष्य किस प्रकार से अपना जीवन जी रहा है। इन सारी यथार्थ घटनाओं का वर्णन लेखक के उपन्यास पात्रों द्वारा स्पष्ट करने का यह एक प्रयास मैं कर रहा हूँ।

**विषय चयन की प्रेरणाः**

विषय चयन की प्रेरणा मुझे मेरे मार्गदर्शक प्रा.डॉ.संतोष येरावार जी से मिली। जगदीशचंद्र का उपन्यास साहित्य यथार्थ से भरा है। इसी यथार्थ साहित्य के पात्रों की तुलना वर्तमान जीवन से करने की दृष्टि से सरजी ने मुझे ‘जगदीशचंद्र के उपन्यासों का चरित्रगत अध्ययन’ इस विषय पर अनुसंधान करने की सलाह दी और यह विषय मुझे बेहद पंसद आया।

**अनुसंधान की पध्दतियाँः**

इस अनुसंधान को आज की दृष्टि से न्याय देने के लिए मुझे विभिन्न प्रकार की अनुसंधान पध्दतियों का सहारा लेना पड़ेगा। जैसे व्याख्यात्मक, तुलनात्मक, आलोचनात्मक, वर्णनात्मक अनुसंधान पध्दती का

भी उपयोग किया जायेगा। इस अनुसंधान कार्य में प्रसंगानुरूप अन्य अनुसंधान पद्धतियों को भी अपनाया जायेगा।

**विषय का पूर्व विहंगावलोकन:**

जगदीशचंद्र के उपन्यासों पर पहले भी अनुसंधान कार्य हुआ है जिसका अवलोकन मैंने किया है। जिनमें 'उपन्यासकार जगदीशचंद्र संवेदना और शिल्प'-डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय, 'जगदीशचंद्र के उपन्यासों में व्यक्त यथार्थ बोध'-डॉ.पवन एमेकर आदि विषय पर अनुसंधान कार्य हुआ है। किंतु 'जगदीशचंद्र के उपन्यासों का चरित्रगत अध्ययन' इस विषय पर किसी ने विशेष रूप से शोधकार्य नहीं किया है। इसी कारण मैंने इस नये विषय को लेकर जगदीशचंद्र के उपन्यासों का चरित्रगत अध्ययन करने की बात ठानी है। इस विषय से आज के जीवन की तुलना करने का प्रयास किया जायेगा। जिससे हर एक चरित्र के गुण-दोषों को समाज के सामने प्रस्तुत किया जायेगा। अनुसंधान के क्षेत्र में यह शोध कार्य एक नई उपलब्धि हो सकती है।

**अनुसंधान करने के पीछे कुछ अनुमान निम्न प्रकार से:**

१) जगदीशचंद्र के उपन्यास साहित्य को समझना।

२) जगदीशचंद्र के उपन्यास साहित्य के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करना।

३) जगदीशचंद्र के उपन्यास साहित्य में व्यक्त समस्याओं को समझना।

४) जगदीशचंद्र के उपन्यासों की प्रासंगिता को उद्घाटित करना।

**अनुसंधान का उद्देश:**

जगदीशचंद्र के उपन्यास साहित्य में चित्रित-चरित्र में माता-पिता, भाई-बहन, देवर-भाभी ऐसे बहुत से चरित्र है जो आज के युग की प्रासंगिकता को प्रस्तुत करते हुए नजर आते है। इनके उपन्यासों में आंचलिकता, महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ, नारी जीवन की समस्याएँ, खानदानी दुश्मनी, आदि प्रकार

की अनेक बातों के दर्शन होते है। इन समस्याओं को लेखक के समस्त उपन्यास पात्रों के माध्यम से मैं समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

समाज में विभिन्न प्रकार के रिश्ते-नाते है उसमें किस प्रकार का परिवर्तन हो रहा है उसे लेखक के उपन्यास पात्रों द्वारा देखा जा सकता है। जगदीशचंद्र के उपन्यासों का चरित्रगत अध्ययन कर उसकी तुलना आज के मनुष्य के साथ कर दोनों की समानता और भेद को समाज के सामने लाने का कार्य मैं इस अनुसंधान के द्वारा करना चाहता हूँ। इन दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से एक नये समाज की परिकल्पना को स्थापित करने का प्रयास इस अनुसंधान द्वारा होनेवाला है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अध्ययन की सुविधा के लिए इसे छह अध्यायों में विभाजित किया गया है।

१) जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२) जगदीशचंद्र के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

३) जगदीशचंद्र के उपन्यासों में प्रमुख पुरूष पात्र

४) जगदीशचंद्र कें उपन्यासों में प्रमुख नारी पात्र

५) जगदीशचंद्र के उपन्यासों में गौण पात्र

६) मुल्यांकन तथा निष्कर्ष

प्रथम अध्याय में जगदीशचंद्र के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लेखक का जन्म, बचपन, शिक्षा-दिक्षा, विवाह तथा उनपर हुए संस्कार को प्रस्तुत किया गया है। लेखक के कृतित्व में उनके रचना संसार को प्रस्तुत किया गया है। उनका एक ही कहानी संग्रह है जिसका नाम 'पहली रपट' है। इस कहानी संग्रह में कुल पंद्राह कहानियाँ संकलित है। वह निम्न प्रकार की है-

१) पुराने घर २) चक्कर ३) सब-एकाउंटेंट ४) तुफान के बाद ५) नीति का निर्णय

६) पच्चू ७) शाहजी ८) गुँगी ९) पहलवान १०) शैहरत

११) पुराना नाम-गया-नाम  १२ ) हवा का झोंका  १३) अलग-अलग नम्बर

१४) आधा टिकट  १५) पहली रपट

इन कहानियों के अलावा लेखक ने कुल दस उपन्यास लिखे है। जिसमें जाति-पाँति समस्याएँ, नारी समस्याएँ, युध्द विषयक समस्याएँ, भूमि अधिग्रहण की समस्याएँ आदि सभी बातों के स्पष्ट दर्शन होते हुए नजर आते है।

आपका उपन्यास साहित्य निम्न प्रकार का है-

१) यादों के पहाड़ (१९६६)  २) धरती धन न अपना (१९७२)  ३) आधा पूल(१९७३)

४) मुठ्ठी भर काँकर (१९७६)  ५) कभी न छोड़े खेत(१९७६)  ६)टुण्डा लाट (१९७८)

७)घास गोदाम (१९८५)  ८)नरक कुंड में बास(१९९४)  ९)लाट की वापसी(२०००)

१०) जमीन अपनी तो थी (२००१)

द्वितीय अध्याय में जगदीशचंद्र के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

**यादों के पहाड़ः-**

लेखक का यह प्रथम उपन्यास है। इसमें प्रेम भावनाओं का चित्रण हुआ है। मनुष्य किस प्रकार से अपने वर्तमान जीवन को छोड़ स्वप्न की दुनिया में बह जाता है इसे प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

**धरती धन न अपनाः-**

प्रस्तुत उपन्यास में वर्ग भेद, दलित जीवन, किसान की व्यथा आदि सारी बातों को प्रस्तुत किया गया है। इस रचना के माध्यम से लेखक ने सदियों से दबे-कुचले दलितों की पीड़ा को उजागर किया है।

**आधा पूलः-**

इस उपन्यास में सैनिकी जीवन कि समस्याओं को चित्रित किया गया है। युध्द से निर्माण होनेवाली समस्याओं का वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है।

**मुट्ठी भर काँकरः-**

प्रस्तुत उपन्यास में भूमि अधिग्रहण की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन की सत्यता को इस रचना के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

**कभी न छोड़े खेतः-**

इस उपन्यास में खानदानी दुश्मनी के दुष्परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। नारी जीवन की समस्याएँ, भ्रष्टाचार, धार्मिक अंडम्बर इन सारी बातों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है।

**टुण्डा लाटः-**

सैनिकी जीवन की विभिन्न समस्याओं का वर्णन आलोच्य उपन्यास में हुआ है। एक अपाहिज सिपाही के साथ समाज की ओर से होनेवाला बरताव इन सारी यथार्थ बातों का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

**घास गोदामः-**

भूमि अधिग्रहण से निर्माण होने वाली विभिन्न समस्याएँ तथा एक किसान से मजदूर होने का दुःख इन सारी बातों को प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से उजागर किया गया है।

**नरक कुंड में बासः-**

मनुष्य को अपना पेट भरने के लिए पशु की तरह मेहनत करनी पड़ती है इस यथार्थ को आलोच्य उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

**लाट की वापसी:-**

इस उपन्यास में मानव धर्म की भावना को बडे सशक्त रुप से प्रस्तुत किया गया है। किस प्रकार हमें दूसरों की सहायता करनी चाहिए यह सीख इस उपन्यास के माध्यम से मिलती है।

**जमीन अपनी तो थी:-**

प्रस्तुत उपन्यास में जमीन की अहमियत को प्रस्तुत किया गया है। दलित वर्ग के लोगों की जमीन का मालिक बनने की इच्छा किस प्रकार अधुरी रह जाती है इसे आलोच्य उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में 'जगदीशचंद्र के उपन्यासों में प्रमुख पुरुष पात्र ' इस शिर्षक का विश्लेषण किया जाऐगा। इस अध्याय में जगदीशचंद्र के उपन्यासों में प्रमुख पुरुष पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया जाऐगा। जिसमें पुरुष के विभिन्न रुपों को उजागर किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय में 'जगदीशचंद्र के उपन्यासों में प्रमुख नारी पात्रों' की चर्चा की जाऐगी। नारी के विभिन्न रुपों का चित्रण लेखक के उपन्यासों में प्रस्तुत नारी पात्रों द्वारा किया जानेवाला है। नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को उद्‌घटित करने का प्रयास किया जायेगा।

पंचम अध्याय में 'जगदीशचंद्र के उपन्यासों में गौण पात्रों' की चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया जाऐगा। केवल प्रमुख पात्र ही नही तो गौण पात्रों की महत्ता को भी प्रस्तुत किया जाऐगा।

षष्ठम अध्याय में समस्त अनुसंधान पर चर्चा होगी। समस्त शोध प्रबंध का मूल्यांकन एवं निष्कर्ष अनुसंधान की उपलब्धियाँ, अध्ययन की नई दिशाएँ, शोध कार्य संपन्न होने के बाद उपरोक्त

अध्यायों का सारांश मौलिक दृष्टि से इस अध्याय में प्रस्तुत किया जायेगा। आवश्यकता पड़ने पर रूपरेखा में उचित परिवर्तन भी किये जायेंगे।

**संदर्भ ग्रंथः**

**कहानी संग्रहः** ‘पहली रपट’

**उपन्यासः** यादों के पहाड़ (१९६६), धरती धन न अपना (१९७२) , आधापूल (१९७३), मुठ्ठी भर काँकर (१९७६) ,कभी न छोड़े खेत(१९७६),टुण्डा लाट (१९७८) ,घास गोदाम (१९८५),नरक कुंड में बास(१९९४),लाट की वापसी(२०००), जमीन अपनी तो थी (२००१)

**शोध कर्ता** | **शोध निर्देशक**

**बिरादार उमाकांत अन्नेप्पा** | **डॉ. येरावार संतोष विजयराव**